Lauhe Mahfuz Ke Baare Mein
Dilchasp Ma'lumaat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 300
Weekly Booklet : 300

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की
एक क़िस्त मअ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

लौहे महफ़ूज़

के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

सफ़हात 26

लौहे महफ़ूज़ की बनावट 02
दोस्त किस को बनाएं ? 08
इमाम शाफ़ेई का
अन्दाज़े इस्लाह 13
70 बीमारियों से शिफ़ा 17

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**लौहे महफ़ूज़ के बारे में दिलचस्प मा'लूमात**
सिने त़बाअ़त	:	रमज़ानुल मुबारक **1444** हि., अप्रैल **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

लौहे महफ़ूज़ के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

येह रिसाला **(लौहे महफ़ूज़ के बारे में दिलचस्प मा'लूमात)** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़हा 376 ता 395 से लिया गया है।

लौहे महफ़ूज़ के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 24 सफ़हात का रिसाला **"लौहे महफ़ूज़ के बारे में दिलचस्प मा'लूमात"** पढ़ या सुन ले उसे इ़ल्मो अ़मल की दौलत से नवाज़ और उसे वालिदैन व ख़ान्दान समेत बे हिसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "जिसे कोई मुश्किल पेश आए उसे मुझ पर कसरत से दूरूद पढ़ना चाहिये क्यूं कि मुझ पर दूरूद पढ़ना मुसीबतों और बलाओं को टालने वाला है।"

(القول البدیع، ص414، بستان الواعظین للجوزی ص472)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! होश संभालने के बा'द तक़रीबन हर मुसल्मान लौहे महफ़ूज़ का नाम सुन लेता है लेकिन सब को लौहे महफ़ूज़ के बारे में मा'लूमात भी हों येह ज़रूरी नहीं, आइये ! मा'लूम करते हैं कि लौहे महफ़ूज़ क्या है। लौहे महफ़ूज़ का तज़्किरा करते हुए **अल्लाह** पाक पारह 30 **सूरतुल बुरूज** आयत नम्बर 21 और 22 में इर्शाद फ़रमाता है :

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِیْدٌۙ(۲۱) فِیْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ۠(۲۲) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला कुरआन है लौहे महफ़ूज़ में।

हज़रते अल्लामा मुहम्मद बिन अहमद अन्सारी कुरतुबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **तफ़्सीरे कुर्तुबी** जिल्द 10 सफ़हा 210 पर इन आयात के तहत लिखते हैं : या'नी कुरआने करीम एक **लौह** में लिखा गया है जो शयातीन की पहुंच से दूर, **अल्लाह** पाक के पास महफ़ूज़ है। उलमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم लिखते हैं : लौहे महफ़ूज़ में मख़्लूक़ की तमाम अक़्साम और इन के मुतअल्लिक़ तमाम उमूर मसलन मौत, रिज़्क़, आ'माल और उस के नताइज और इन पर नाफ़िज़ होने वाले फ़ैसलों का बयान है। (تفسیر قرطبی، 10/210)

लौहे महफ़ूज़ कहां है ?

हज़रते मुक़ातिल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : लौहे महफ़ूज़ अ़र्श की दाईं (या'नी सीधी) जानिब है। (تفسیر قرطبی، 10/210)

लौहे महफ़ूज़ सफ़ेद मोती से बनी है

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : लौहे महफ़ूज़ सफ़ेद मोती से बनी है, उस का **क़लम** नूर और किताबत (या'नी लिखाई) भी नूर है।

(حلیۃ الاولیاء، 4/338، رقم:5767 ماخوذاً)

सब से पहले लौहे महफ़ूज़ में क्या लिखा गया ?

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने सब से पहली चीज़ लौहे महफ़ूज़ में येह लिखी कि मैं **अल्लाह** हूं मेरे सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं ! **मुहम्मद** (صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरे रसूल हैं। जिस ने मेरे फ़ैसले को तस्लीम कर लिया और मेरी नाज़िल की हुई मुसीबत पर

सब्र किया और मेरी ने'मतों का शुक्र अदा किया तो मैं ने उस को **सिद्दीक़** लिखा है और उस को सिद्दीक़ीन के साथ उठाऊंगा और जिस ने मेरे फ़ैसले को तस्लीम नहीं किया और मेरी नाज़िल की हुई मुसीबत पर **सब्र** नहीं किया और मेरी ने'मतों का शुक्र अदा नहीं किया वोह मेरे सिवा जिसे चाहे अपना मा'बूद बना ले। (تفسیر قرطبی، 10/210)

तुम नफ़्स के पीछे लग गए हो

हज्जाज बिन यूसुफ़ ने हज़रते मुहम्मद बिन हनफ़िया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को धमकी आमेज़ मक्तूब भेजा तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जवाब में लिखा : मुझ तक येह रिवायत पहुंची है कि **अल्लाह** पाक हर रोज़ **लौहे महफ़ूज़** में तीन सो साठ मर्तबा नज़र फ़रमाता है, वोह इज़्ज़त और ज़िल्लत देता है, तंगी और फ़राख़ी (या'नी कुशादगी) फ़रमाता है और वोह जो चाहे करता है, शायद उन नज़रों में से एक नज़र ने तुम्हें तुम्हारे नफ़्स के साथ ऐसा मश्ग़ूल कर दिया है कि तुम इस से फ़राग़त ही नहीं पाते। (تفسیر قرطبی، 10/210)

क़ियामत तक होने वाली हर बात लौहे महफ़ूज़ में लिखी हुई है

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने **लौहे महफ़ूज़** को पैदा फ़रमाया, उस की लम्बाई एक सो साल की मसाफ़त (फ़ासिला, दूरी) थी फिर उस ने मख़्लूक़ को पैदा करने से पहले **क़लम** को फ़रमाया तू मेरी मख़्लूक़ के बारे में मेरा इल्म लिख दे पस उस ने क़ियामत तक होने वाला सब कुछ लिख दिया। (العظمۃ لابی الشیخ، ص86، رقم:223)

"لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" की गवाही देने वाला दाख़िले जन्नत होगा

हज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** पाक ने लौहे महफ़ूज़ में

लिखा : ''اِنِّیۡ اَنَا اللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنَا'' बिला शुबा मैं **अल्लाह** हूं और मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं ने तीन सो दस से कुछ ज़ाइद (क़िस्मों की) मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई उन में से जिस मख़्लूक़ ने भी येह शहादत दी لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ वोह जन्नत में दाख़िल होगी।'' (تفسیر درمنثور، 8/472)

जन्नत का हक़दार कौन ?

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : ''लौहे़ महफ़ूज़ पर लिखा है **अल्लाह** पाक के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उस का दीन इस्लाम है और **मुहम्मद** (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं। जो उस पर ईमान लाया और उस का वा'दा सच्चा किया और उस के रसूलों की इत्तिबाअ़ (या'नी पैरवी) की तो **अल्लाह** पाक उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' (تفسیر بغوی، 4/441)

अ़जब नहीं कि लिखा लौह़ का नज़र आए जो नक़्शे पा का लगाऊं ग़ुबार आंखों में

(सामाने बख़्शिश, स. 147)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

बेटा पैदा होने की बिशारत

हज़रते शाह **वलिय्युल्लाह** मुह़द्दिसे देहलवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे माजिद ह़ज़रते शाह अ़ब्दुर्रह़ीम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं एक बार ह़ज़रते ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के मज़ारे मुनव्वर की ज़ियारत के लिये गया। उन की रूह़े मुबारक ज़ाहिर हुई और फ़रमाया : ''**तुम्हारे यहां फ़रज़न्द पैदा होगा उस का नाम क़ुत़्बुद्दीन अह़मद रखना।**'' चूंकि ज़ौजा बुढ़ापे को पहुंच गई थीं इस लिये मैं ने ख़याल किया शायद इस इर्शाद से मुराद बेटे का बेटा या'नी पोता होगा।

हज़रते ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ मेरे इस **दिली ख़याल** पर फ़ौरन मुत्तलअ़ हो गए और फ़रमाया : मेरी येह मुराद नहीं है बल्कि वोह फ़रज़न्द तुम्हारी सुल्ब (या'नी पीठ) से होगा।" शाह **वलिय्युल्लाह** साहिब رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ मजीद फ़रमाते हैं : वालिदे माजिद رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने एक मुद्दत के बा'द दूसरी ख़ातून से अ़क़्द (या'नी निकाह) फ़रमाया तो येह कातिबुल हुरूफ़ फ़क़ीर **वलिय्युल्लाह** पैदा हुवा। शुरूअ़ में येह वाक़िआ याद न रहा तो "**वलिय्युल्लाह**" नाम रख दिया और कुछ अ़र्से के बा'द याद आया तो दूसरा नाम (हज़रते ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ के फ़रमान के मुताबिक़) कुत्बुद्दीन अह़मद रखा। (انفاس العارفین، ص79)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

पहले ख़याल पर क्यूं न निकले ?

अल्लाह पाक की अ़ता से ह़ज़रते शैख़ **जुनैद बग़दादी** رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ भी दिलों के ह़ाल जान लेते थे चुनान्चे ह़ज़रते ख़ैरुन्नसाज رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं अपने घर में था कि दिल में ख़याल आया कि ह़ज़रते शैख़ जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए हैं मगर मैं ने तवज्जोह हटा दी मगर फिर दोबारा और सहबारा (या'नी तीसरी बार) येही ख़याल आया, निकला तो वाक़ेई आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ दरवाज़े पर थे, मुझ से फ़रमाया : **पहले ख़याल पर क्यूं न निकले !** (رسالہ قشیریہ، ص274)

سُبْحٰنَ اللہ ! देखा आप ने ! ह़ज़रते शैख़ **जुनैद बग़दादी** رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने **ग़ैब** की ख़बर इर्शाद फ़रमा दी कि "पहली बार ख़याल आते ही क्यूं न निकले !" जब औलिया के **इल्मे ग़ैब** का येह ह़ाल है तो **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा**

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **इल्मे गै़ब** का क्या मक़ाम होगा ! ह़ज़रते इमाम बूसैरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने मश्हूरे ज़माना "क़सीदए बुर्दा शरीफ़" में अ़र्ज़ करते हैं :

فَاِنَّ مِنْ جُوْدِكَ الدُّنْيَا وَضَرَّتَها   وَمِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوحِ وَالْقَلَمِ

या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दुन्या व आख़िरत दोनों हुज़ूर के जूदो बख़्शिश में से एक ह़िस्सा हैं और लौह़ो क़लम का इ़ल्म (जिस में तमाम مَاكَانَ وَمَا يَكُون या'नी जो हुवा और होगा सब लिखा है) आप के उ़लूम का एक ह़िस्सा हैं ।) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ गुज़ार हैं :

ख़ुदा ने किया तुझ को आगाह सब से   दो आ़लम में जो कुछ ख़फ़ी व जली है

करूं अ़र्ज़ क्या तुझ से ऐ आ़लिमुस्सिर   कि तुझ पर मेरी ह़ालते दिल खुली है

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इन अश्आ़र में फ़रमाते हैं :

(1) **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दोनों जहानों में जो कुछ ख़फ़ी व जली (या'नी छुपा और ज़ाहिर) है उस से **अल्लाह** पाक ने आप को आगाह कर दिया है । (2) ऐ आ़लिमुस्सिर (या'नी ऐ छुपे हुए ह़ालात जानने वाले !) आप से क्या अ़र्ज़ करूं आप पर तो मेरे दिल की सारी ह़ालत ज़ाहिर है ।[(1)]

गिर्दाबे बला में फंस के कोई त़यबा की त़रफ़ जब तकता है

सुल्त़ाने मदीना ख़ुद आ कर बिगड़ी को बनाया करते हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

---

(1)... इ़ल्मे गै़ब के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये रिसालए ख़ालिसुल ए'तिक़ाद (फ़तावा रज़विय्या 29/411 ता 483), अल कलिमतुल उ़ल्या (अज़ : सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नई़मुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) और **जाअल ह़क़** (अज़ : मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद है ।

वफ़ात के बा'द भी नेकी की दा'वत

सुलैमान उ़मरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते अबू जा'फ़र क़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देखा, फ़रमा रहे थे : मेरे भाइयों को मेरा सलाम पहुंचा देना और कह देना कि मेरे रब ने मुझ को मक़ामे शुहदा अ़ता फ़रमाया है और अपनी त़रफ़ से रिज़्क़ इनायत किया है और अबू ह़ाज़िम को मेरी त़रफ़ से सलाम कह देना और कहना कि होश कर और समझ दारी से काम ले क्यूं कि **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते तेरी रात की मजलिसों को देखते हैं। (کتاب المنامات مع موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، 3/153، رقم:321)

एक ह़ज़ार रक्अ़त नमाज़ से अफ़्ज़ल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते अबू जा'फ़र क़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को अपनी वफ़ात के बा'द "अबू ह़ाज़िम" की सोह़बतों की भी मा'लूमात थीं और ब ज़ाहिर ऐसा लगता है कि "अबू ह़ाज़िम" रात बुरी सोह़बतों में बैठते होंगे इस लिये सलाम व पयाम के ज़रीए़ बुरी बैठकों से ख़बरदार करते हुए उन्हें "नेकी की दा'वत" पेश की। बुरी सोह़बत से हम सभी को बचना चाहिये कि इस से अच्छा ख़ासा नेक इन्सान भी बिगड़ जाता है। हमेशा नेक बन्दों और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कीमियाए सआ़दत में फ़रमाते हैं : ऐसे इन्सान को तलाश करे जिस की सोह़बत और बातों से दुन्या की रग़बत कम और आख़िरत की त़रफ़ त़बीअ़त माइल हो जिस आदमी की बातों में ऐसी तासीर न हो उस की सोह़बत को "इल्मी मजलिस" नहीं कहा जाएगा, मन्क़ूल है : इल्मी मजालिस में ह़ाज़िर होना

एक हज़ार रक्अ़त नवाफ़िल पढ़ने से ज़ियादा अफ़्ज़ल है। (کیمیائے سعادت، ص161)
ह़ज़रते मौलाना रूम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ **मस्नवी शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

یک زمانہ صحبتِ بااولیاء بہتر از صد سالہ طاعتِ بے ریا

(थोड़ी सी देर की औलिया की सोहबत सो सालह बे रिया या'नी ख़ालिस इबादत से बेहतर है)

चूहे और मेंडक की दोस्ती

आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते मौलाना रूम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बुरी सोहबत का नुक़्सान समझाते हुए फ़रमाते हैं : इत्तिफ़ाक़न एक नदी के कनारे पर एक चूहे की मेंडक से मुलाक़ात हो गई और दोनों में दोस्ती हो गई, चूहे ने कहा कि कभी मिलने को दिल चाहे तो आप पानी की गहराई में होते हैं जहां आवाज़ भी नहीं पहुंच सकती तो फिर आप को इत्तिलाअ़ किस त़रह़ हो ? आख़िर तै येह पाया कि एक तागा (धागा) चूहे के पांव में और इस का दूसरा सिरा मेंडक के पांव में बांध दिया जाए। वक़्ते ज़रूरत इत्तिलाअ़ की तरकीब हो जाएगी, चुनान्चे ऐसा ही किया गया। एक दिन अचानक कव्वे ने चूहे पर झपटा मारा और उस को मुंह में ले कर उड़ा तो मेंडक भी धागे में बंधा होने के सबब इस के साथ खिंचा खिंचा हवा में चला जा रहा था, मेंडक ने कहा कि येह चूहे जैसे ना जिन्स (या'नी ना लाइक़) से दोस्ती की सज़ा है। मा'लूम हुवा, ना जिन्सों (ना लाइक़ों) और बुरी बुरी सोहबतों के सबब बहुत आफ़ात पहुंचती हैं।

اے فُغاں از یارِ ناجنس اے فُغاں ہمنشینِ نیک جوئید اے مِہاں

(फ़रियाद है ! ना जिन्स (या'नी ना लाइक़) दोस्त से फ़रियाद है। ऐ दोस्तो ! नेक साथी तलाश करो) (مثنوی، دفتر ششم، ص266،267،285بتغیر)

आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों में बैठो कि उन की मह़बब्त और सोह़बत से ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ासिल होता है। ह़दीसे क़ुदसी है : وَجَبَتْ مَحَبَّتِیْ لِلْمُتَحَابِّیْنَ فِیَّ وَالْمُتَجَالِسِیْنَ فِیَّ وَالْمُتَزَاوِرِیْنَ فِیَّ وَالْمُتَبَاذِلِیْنَ فِیَّ **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : जो लोग मेरी वज्ह से आपस में मह़ब्बत रखते हैं और मेरी वज्ह से एक दूसरे के पास बैठते हैं और आपस में मिलते जुलते हैं और माल ख़र्च करते हैं उन से मेरी **मह़ब्बत** वाजिब हो गई।

(موطاامام مالک، 2/439، حدیث:1828)

ह़दीसे पाक बयान करने वाले मुबल्लिग़ की ह़िकायत

ह़ज़रते अ़बदान बिन मुह़म्मद मर्वज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ाफ़िज़ या'क़ूब बिन सुफ़्यान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** करीम ने मेरी मग़्फ़िरत कर दी और फ़रमाया कि तुम जिस त़रह़ दुन्या में ह़दीस बयान करते थे, आस्मान पर भी बयान करो, **चुनान्चे** मैं ने चौथे आस्मान पर ह़दीसे पाक बयान की तो फ़िरिश्ते मेरे पास जम्अ़ हो गए और ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे ह़दीसे पाक इम्ला करवाने का हुक्म दिया फिर फ़िरिश्तों ने उस (ह़दीस शरीफ़) को **सुनह्री क़लमों** से लिखा।

(شرح الصدور، ص293)

वालिदे मर्ह़ूम सब्ज़ लिबास में मल्बूस मुस्करा रहे थे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने उ़लमाए दीन और ह़दीसों के **मुबल्लिग़ीन** का कितना बुलन्द रुत्बा है ! बा'दे वफ़ात मग़्फ़िरत की बिशारत भी इ़नायत हुई और चौथे आस्मान पर फ़िरिश्तों के दरमियान ह़दीसे पाक बयान करने की सआ़दत भी मिली, और फ़िरिश्तों ने उस ह़दीसे मुबारक को सुनह्री क़लमों से तह़रीर फ़रमाया। आख़िरत में जन्नत

की त़लब रखने वालो ! आप भी **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और सुन्नतें सीखने सिखाने के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के ज़रीए़ **इल्मे दीन** का ख़ज़ाना इकठ्ठा कीजिये और नेक आ'माल पर अ़मल, सुन्नतों भरे बयानात और रोज़ाना **फ़ैज़ाने सुन्नत** से कम अज़ कम दो दर्स दे कर जन्नतुल फ़िरदौस के हुसूल की सईये पैहम (या'नी मुसल्सल कोशिश) जारी रखिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **मदनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने जो कुछ बयान किया वोह बित्तसर्रुफ़ अ़र्ज़ करता हूं : उन्हों ने अपने वालिदे मर्ह़ूम को ख़्वाब में इन्तिहाई कमज़ोरी की ह़ालत में बरह्ना किसी के सहारे पर चलता हुवा देखा। उन्हें तश्वीश हुई। उन्हों ने **ईसाले सवाब** की निय्यत से हर माह तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत कर ली और सफ़र शुरूअ़ भी कर दिया। तीसरे माह मदनी क़ाफ़िले से वापसी के बा'द जब वोह घर पर सोए तो उन्हों ने ख़्वाब में येह दिलकश मन्ज़र देखा कि वालिदे मर्ह़ूम सब्ज़ सब्ज़ लिबास ज़ेबे तन किये बैठे मुस्कुरा रहे हैं और उन पर बारिश की हलकी फुल्की फुवार बरस रही है। اَلْحَمْدُلِلّٰه **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की **अहम्मिय्यत** उन पर ख़ूब उजागर हुई और उन्हों ने पक्की निय्यत की اِنْ شَآءَاللّٰه **हर माह तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र जारी रखूंगा।

मांगो आ कर दुआ़, क़ाफ़िले में चलो पाओगे मुद्दआ़, क़ाफ़िले में चलो
ख़ूब होगा सवाब और टलेगा अ़ज़ाब होगा फ़ज़्ले ख़ुदा, क़ाफ़िले में चलो
फ़ौतगी हो गई, गुम गया है कोई मांगने को दुआ़, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

क्या ख़्वाब से यक़ीनी इल्म हासिल हो जाता है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अच्छे ख़्वाब बेशक अच्छे होते हैं। याद रखिये ! नबी का ख़्वाब वही पर मुश्तमिल होता है जब कि ग़ैरे नबी के ख़्वाब की येह हैसिय्यत नहीं और उस का ख़्वाब **हुज्जत** या'नी दलील नहीं होता। मसलन आप ने ख़्वाब में बारगाहे रिसालत से येह बिशारत सुनी है कि "आप जन्नती हैं।" इस से क़त्ई जन्नती होना मुराद नहीं लिया जाएगा क्यूं कि मुआमला ख़्वाब का है। बेशक **अल्लाह** पाक के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जिस ने ख़्वाब में देखा उस ने हक़ देखा कि शैतान आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरते मुबारका में नहीं आ सकता। जो बात इर्शाद फ़रमाई वोह भी हक़ हक़ और हक़ के सिवा कुछ नहीं। ताहम ख़्वाब में चूंकि हवास मुज़्महिल (या'नी कमज़ोर) होते हैं इस लिये यक़ीन के साथ येह नहीं कहा जा सकता कि जो कुछ फ़रमाया गया वोह ख़्वाब देखने वाले ने हर्फ़ ब हर्फ़ दुरुस्त सुना, सुनने और समझने में ग़लत फ़हमी का हर इम्कान मौजूद है, लिहाज़ा ख़्वाब में दिये हुए हुक्म पर अमल करने से पहले हुक्मे शरीअत को देखना होगा। अगर ख़्वाब वाली बात शरीअत से नहीं टकराती तो बेशक उस पर अमल किया जा सकता है ताहम ख़्वाब में मिले हुए हुक्म पर अमल करना शर्अन वाजिब नहीं और अगर वोह बात ही ख़िलाफ़े शर्अ है तो अमल नहीं किया जाएगा। इस बात को इस मिसाल से समझिये जिस में

ख़्वाब में शराब नोशी का हुक्म दिया या मन्अ फ़रमाया ?

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, एक शख़्स ने ख़्वाब देखा कि जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (مَعَاذَاللّٰه) उसे शराब नोशी का हुक्म दे रहे हैं। इमाम

जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में मुआ़मला पेश किया गया। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुझे शराब पीने से रोका है, तेरे सुनने में उलटा आया।" और येह भी याद रखा जाए कि इस मुआ़मले में फ़ासिक़ व मुत्तक़ी बराबर हैं। चुनान्चे न तो मुत्तक़ी का ख़्वाब में किसी हुक्म का सुनना, उस हुक्म के सहीह़ होने की दलील है और न ही फ़ासिक़ का बयान यक़ीनी तौ़र पर झूटा। (फ़तावा रज़विय्या, 5/100, माख़ूज़न)

मेरे तुम ख़्वाब में आओ मेरे घर रोशनी होगी मेरी क़िस्मत जगा जाओ इनायत येह बड़ी होगी

(वसाइले बख़्शिश, स. 278)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जब एक नौ जवान को वुज़ू ग़लत़ करते देखा

एक बुज़ुर्ग बग़दाद शरीफ़ के किसी अ़लाक़े से गुज़र रहे थे, उन्हों ने एक नौ जवान को देखा जो अच्छे त़रीक़े से **वुज़ू** न कर रहा था तो बड़े प्यार भरे अन्दाज़ में उस से फ़रमाया : "ऐ नौ जवान ! वुज़ू ठीक से कीजिये, **अल्लाह** पाक दुन्या व आख़िरत में आप पर एह़सान फ़रमाए।" येह फ़रमा कर वोह तशरीफ़ ले गए। वोह नौ जवान उन बुज़ुर्ग की **नेकी की दा'वत** देने के मीठे मीठे अन्दाज़ से बेह़द **मुतअस्सिर** हुवा और वुज़ू के बा'द उन बुज़ुर्ग की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर नसीह़त का त़ालिब हुवा, उन्हों ने (नेकी की दा'वत देते हुए) **तीन मदनी फूल** इर्शाद फ़रमाए : ﴿1﴾ जान लीजिये ! जिस ने रब्बे काएनात की **मा'रिफ़त** पा ली (या'नी **अल्लाह** करीम को पहचान लिया) वोह नजात पा गया ﴿2﴾ जिस ने अपने दीन के मुआ़मले में **ख़ौफ़** किया (या'नी **अल्लाह** पाक से डरा) वोह तबाही से बच गया ﴿3﴾ जिस ने दुन्या में **ज़ोहूद** (या'नी बे रग़बती को) इख़्तियार किया

वोह **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से जब कल या'नी बरोज़े मह़शर इस का सवाब देखेगा तो उस की आंखें ठन्डी होंगी । (फिर फ़रमाया) क्या कुछ मज़ीद न बताऊं ? अ़र्ज़ की : ज़रूर इर्शाद हो । फ़रमाया : जिस में तीन ख़ूबियां जम्अ़ हो गईं उस का ईमान मुकम्मल हो गया : ﴾1﴿ जो नेकी का हुक्म दे और ख़ुद भी उस पर अ़मल करे ﴾2﴿ जो बुराई से मन्अ़ करे और ख़ुद भी उस से बाज़ रहे और ﴾3﴿ जो हुदूदे इलाही की ह़िफ़ाज़त करे । (या'नी शरई अह़कामात बजा लाए और शरई मम्नूआ़त से ख़ुद को बचाए) फिर फ़रमाया : क्या कुछ और भी बताऊं ? अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं, ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये । फ़रमाया : दुन्या से बे रग़्बत और आख़िरत का शौक़ रखने वाले हो जाइये और अपने हर काम में रब्बुल अनाम से सच का मुआ़मला कीजिये नजात पाने वालों के साथ नजात पा जाएंगे । येह फ़रमा कर वोह तशरीफ़ ले गए । उस नौ जवान ने उन बुज़ुर्ग के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात की तो उसे बताया गया : येह ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه थे । (احیاء العلوم، 1/45بتغیر) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

बे जा तन्क़ीद के बजाए इस्लाह़ करने वाले बनें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने करोड़ों शाफ़ेइय्यों के पेशवा ह़ज़रते मुह़म्मद बिन इदरीस, अल मा'रूफ़ **"इमाम शाफ़ेई"** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कितनी मह़ब्बत व शफ़्क़त के साथ इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाई और अच्छे त़रीक़े से वुज़ू न करने वाले नौ जवान के वुज़ू की इस्लाह़ भी की और उसे नेकी की दा'वत भी दी । काश ! हम भी येही अन्दाज़ इख़्तियार करने में काम्याब हो जाएं, हमें भी येह तौफ़ीक़ नसीब हो जाए कि जब किसी की

वुज़ू में ग़लतियां और नमाज़ में कोताहियां देखें, झूट, ग़ीबत व चुग़ली के गुनाहों में किसी को मुब्तला पाएं तो पीछे से उस पर बे जा तन्क़ीद और उस की बुराई कर के ख़ुद **ग़ीबत** की गहरी खाई में छलांग लगाने के बजाए उस को गुनाहों की दलदल से निकालने की सई करें, निहायत नरमी और प्यार से उस को समझाने और सवाबे आख़िरत के ख़ज़ाने समेटने वाले बनें। हम ख़ुलूसे निय्यत के साथ किसी को समझाएंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم इस का ज़रूर फ़ाएदा होगा और फ़ाएदा क्यूं न हो कि समझाने से फ़ाएदा पहुंचने का ख़ुद रब्बुल अनाम جَلَّ جَلَالُہٗ अपने सच्चे कलाम में ए'लान फ़रमा चुका (या'नी ख़बर इर्शाद फ़रमा चुका है) चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **''कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** सफ़हा 964 पर पारह 27 **सूरतुज़्ज़ारियात** आयत नम्बर 55 में है : ﴿وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ۝۵۵﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

जिसे नेकी की दा'वत दूं, सुने दिल से करम या रब !
ज़बां में दे असर कर दे, अ़ता ज़ोरे क़लम या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

वुज़ू का त़रीक़ा (ह़नफ़ी)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा वाक़िए़ में ह़ज़रते **इमाम शाफ़ेई** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के नौ जवान के वुज़ू की इस्लाह़ फ़रमाने का तज़्किरा है, जब उस दौर में भी लोग वुज़ू में ग़लतियां कर जाते थे तो आज का दौर तो उस से भी नाज़ुक तर है बल्कि इस बात का मुशाहदा है कि मुसल्मानों की अक्सरिय्यत दुरुस्त त़रीक़े पर वुज़ू करना नहीं जानती लिहाज़ा आइये ! हम

भी वुज़ू का त़रीक़ा सीखते हैं। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 496 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "नमाज़ के अह़काम" सफ़ह़ा 7 ता 13 पर है : का'बतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के ऊंची जगह बैठना मुस्तह़ब है। वुज़ू के लिये निय्यत करना सुन्नत है, निय्यत न हो तब भी वुज़ू हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा। निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी कह लेना अफ़्ज़ल है लिहाज़ा ज़बान से इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं हुक्मे इलाही बजा लाने और पाकी ह़ासिल करने के लिये वुज़ू कर रहा हूं। بِسۡمِ اللّٰہ कह लीजिये कि येह भी सुन्नत है बल्कि بِسۡمِ اللّٰہِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہ कह लीजिये कि जब तक बा वुज़ू रहेंगे फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे। (مجمع الزوائد، 1/513، حدیث:1112) अब दोनों हाथ तीन तीन बार पहुंचों तक धोइये, (नल बन्द कर के) दोनों हाथों की उंग्लियों का ख़िलाल भी कीजिये। कम अज़ कम तीन तीन बार दाएं बाएं ऊपर नीचे के दांतों में मिस्वाक कीजिये और हर बार मिस्वाक धो लीजिये। ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "मिस्वाक करते वक़्त नमाज़ में क़ुरआने मजीद की क़िराअत और ज़िक्रुल्लाह के लिये मुंह पाक करने की निय्यत करनी चाहिये।" (احیاء العلوم، 1/182) अब सीधे हाथ के तीन चुल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) इस त़रह़ तीन कुल्लियां कीजिये कि हर बार मुंह के हर पुर्ज़े पर (ह़ल्क़ के कनारे तक) पानी बह जाए, अगर रोज़ा न हो तो ग़रग़रा भी कर लीजिये। फिर सीधे ही हाथ के तीन चुल्लू (अब हर बार आधा चुल्लू पानी काफ़ी है) से (हर बार नल बन्द कर के) तीन बार नाक में नर्म गोश्त तक पानी चढ़ाइये और अगर रोज़ा न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाइये, अब (नल बन्द कर के) उल्टे हाथ

से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराख़ों में डालिये। तीन बार सारा चेहरा इस त़रह़ धोइये कि जहां से आ़दतन सर के बाल उगना शुरूअ़ होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाए। अगर दाढ़ी है और एह़राम बांधे हुए नहीं हैं तो (नल बन्द करने के बा'द) इस त़रह़ ख़िलाल कीजिये कि उंग्लियों को गले की त़रफ़ से दाख़िल कर के सामने की त़रफ़ निकालिये। फिर पहले सीधा हाथ उंग्लियों के सिरे से धोना शुरूअ़ कर के कोहनियों समेत तीन बार धोइये। इसी त़रह़ फिर उल्टा हाथ धो लीजिये। दोनों हाथ आधे बाज़ू तक धोना मुस्तह़ब है। अक्सर लोग चुल्लू में पानी ले कर पहुंचे से तीन बार छोड़ देते हैं कि कोहनी तक बहता चला जाता है इस त़रह़ करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पहुंचने का अन्देशा है लिहाज़ा बयान कर्दा त़रीक़े पर हाथ धोइये। अब चुल्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की ह़ाजत नहीं बल्कि (बिग़ैर इजाज़ते सह़ीह़ा ऐसा करना) इसराफ़ है। अब (नल बन्द कर के) सर का मस्ह़ इस त़रह़ कीजिये कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंग्लियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंग्लियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या खाल पर रख कर खींचते हुए गुद्दी तक इस त़रह़ ले जाइये कि हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये, कलिमे की उंग्लियां और अंगूठे इस दौरान सर पर बिल्कुल मस नहीं होने चाहिएं, फिर कलिमे की उंग्लियों से कानों की अन्दरूनी सत़ह़ का और अंगूठों से कानों की बाहरी सत़ह़ का मस्ह़ कीजिये और छुंग्लियां (या'नी छोटी उंग्लियां)

कानों के सूराख़ों में दाख़िल कीजिये और उंग्लियों की पुश्त से गरदन के पिछले हिस्से का मस्ह़ कीजिये। बा'ज़ लोग गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाइयों का मस्ह़ करते हैं येह सुन्नत नहीं है। (फ़तावा रज़विय्या जिल्द 4 सफ़ह़ा 621 पर मस्ह़ का एक त़रीक़ा येह भी तह़रीर है : इस में बिल ख़ुसूस इस्लामी बहनों के लिये ज़ियादा सहूलत भी है चुनान्चे लिखा है : "मस्ह़े सर में अदाए सुन्नत को येह भी काफ़ी है कि उंग्लियां सर के अगले हिस्से पर रखे और हथेलियां सर की करवटों पर और हाथ जमा कर गुद्दी तक खींचता ले जाए।") सर का मस्ह़ करने से क़ब्ल टोंटी अच्छी त़रह़ बन्द करने की आ़दत बना लीजिये बिला वज्ह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपक कर ज़ाएअ़ होता रहे इसराफ़ व गुनाह है। पहले सीधा फिर उल्टा पांव हर बार उंग्लियों से शुरूअ़ कर के टख़्नों के ऊपर तक बल्कि मुस्तह़ब है कि आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो लीजिये। दोनों पांव की उंग्लियों का ख़िलाल करना सुन्नत है। (ख़िलाल के दौरान नल बन्द रखिये) इस का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि उल्टे हाथ की छुंग्लिया से सीधे पांव की छुंग्लिया का ख़िलाल शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म कीजिये और उल्टे ही हाथ की छुंग्लिया से उल्टे पांव के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंग्लिया पर ख़त्म कर लीजिये। (आ़म्मए कुतुब) ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हर उ़ज़्व धोते वक़्त येह उम्मीद करता रहे कि मेरे इस उ़ज़्व के गुनाह निकल रहे हैं। (احیاء العلوم، 1/183 ملخصًا)

वुज़ू के बचे हुए पानी में 70 बीमारियों से शिफ़ा

लोटे वग़ैरा से वुज़ू करने के बा'द बचा हुवा पानी खड़े हो कर पीना सुन्नत भी है और शिफ़ा भी चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले

सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ''फ़तावा रज़विय्या'' मुख़र्रजा जिल्द 4 सफ़हा 575 ता 576 पर फ़रमाते हैं : बक़िय्यए वुज़ू (या'नी वुज़ू के बचे हुए पानी) के लिये शर्अन अ़ज़मत व एह़तिराम है और नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित कि हुज़ूर ने वुज़ू फ़रमा कर बक़िय्या आब (या'नी बचे हुवे पानी) को खड़े हो कर नोश फ़रमाया और एक ह़दीस में रिवायत किया गया कि इस का पीना सत्तर मरज़ से शिफ़ा है । (مسند الفردوس، 2/362، حدیث:3617) तो वोह इन उमूर में आबे ज़मज़म से मुशाबहत रखता है ऐसे (या'नी वुज़ू के बचे हुए) पानी से इस्तिन्जा मुनासिब नहीं । ''तन्वीर'' के आदाबे वुज़ू में है : ''वुज़ू के बा'द वुज़ू का पसमांदा (या'नी बचा हुवा पानी) क़िब्ला रुख़ खड़े हो कर पिये ।'' (تنویر الابصار، 1/275) अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने तजरिबा किया है कि जब मैं बीमार होता हूं तो वुज़ू के बक़िय्या पानी से शिफ़ा ह़ासिल हो जाती है । नबिय्ये सादिक़ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस सह़ीह़ तिब्बे नबवी में पाए जाने वाले इर्शादे गिरामी पर ए'तिमाद करते हुए मैं ने येह त़रीक़ा इख़्तियार किया है । (ردالمحتار، 1/277) وَاللهُ سُبْحٰنَهٗ وَتعالٰی اَعلَمُ بِالصَّواب۔

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं

ह़दीसे पाक में है : जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया और फिर आस्मान की त़रफ़ निगाह उठाई और कलिमए शहादत पढ़ा उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो ।

(سنن دارمی، 1/196، حدیث:716)

नज़र कभी कमज़ोर न हो

जो वुज़ू के बा'द आस्मान की त़रफ़ देख कर सूरए اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه उस की नज़र कभी कमज़ोर न होगी।

(मसाइलुल कुरआन, स. 291)

वुज़ू के बा'द तीन बार सूरए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल

ह़दीसे मुबारक में है : जो वुज़ू के बा'द एक मर्तबा सूरए क़द्र पढ़े तो वोह सिद्दीक़ीन में से है और जो दो मर्तबा पढ़े तो शुहदा में शुमार किया जाए और जो **तीन** मर्तबा पढ़ेगा तो **अल्लाह** पाक मैदाने मह़शर में उसे अपने अम्बिया के साथ रखेगा। (جمع الجوامع للسیوطی، 7/251 حدیث:22817)

वुज़ू के बा'द पढ़ने की दुआ (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

जो वुज़ू करने के बा'द येह कलिमात पढ़े : سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** तू पाक है और तेरे लिये ही तमाम ख़ूबियां हैं मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं। तो उस पर मोहर लगा कर अ़र्श के नीचे रख दिया जाएगा और क़ियामत के दिन उस पढ़ने वाले को दे दिया जाएगा। (شعب الایمان، 3/21، رقم:2754)

वुज़ू के बा'द येह दुआ भी पढ़ लीजिये

(अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ (ترمذی، 1/121، حدیث:55)

तरजमा : ऐ **अल्लाह**! मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा रहने वालों में शामिल कर दे।

40 मदनी फूलों का रज़वी गुलदस्ता

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के वुज़ू वग़ैरा के **मुतअ़ल्लिक़** इनायत कर्दा मुतफ़र्रिक़ (या'नी जुदा जुदा) रंग बिरंगे ख़ुशनुमा 40 मदनी फूलों का रज़वी गुलदस्ता क़बूल फ़रमाइये। आप की मा'लूमात को اِنْ شَآءَاللهُ मदीने के 12 चांद लग जाएंगे। येह तमाम मदनी फूल फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा (जिल्द 4) के आख़िर में दिये हुए "फ़वाइदे जलीला" सफ़ह़ा 613 ता 746 से लिये गए हैं।

❀ वुज़ू में आंखें ज़ोर से न बन्द करे मगर वुज़ू हो जाएगा (स. 613) ❀ अगर लब (या'नी होंट) ख़ूब ज़ोर से बन्द कर के वुज़ू किया और कुल्ली न की वुज़ू न होगा। (स. 614) ❀ वुज़ू का पानी रोज़े क़ियामत नेकियों के पल्ले में रखा जाएगा। (स. 614) (मगर याद रहे! ज़रूरत से ज़ियादा पानी गिराना इसराफ़ है) ❀ मिस्वाक मौजूद हो तो उंगली से दांत मांजना अदाए सुन्नत व ह़ुसूले सवाब के लिये काफ़ी नहीं, हां मिस्वाक न हो तो उंगली या खरखरा (या'नी खुर्दरा) कपड़ा अदाए सुन्नत कर देगा और औ़रतों के लिये मिस्वाक मौजूद हो जब भी मिस्सी काफ़ी है (स. 615) ❀ अंगूठी ढीली हो तो वुज़ू में उसे फिरा कर पानी डालना सुन्नत है और तंग हो कि बे जुम्बिश दिये पानी न पहुंचे तो फ़र्ज़। येही ह़ुक्म बाली (या'नी कान के ज़ेवर) वग़ैरा का है (स. 616) ❀ आ'ज़ा का मल मल कर धोना वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों में सुन्नत है (स. 616) ❀ आ'ज़ाए वुज़ू धोने में ह़द्दे शर्ई से इतनी ख़फ़ीफ़ तह़रीर (या'नी हर त़रफ़ से मा'मूली सा) बढ़ाना जिस से ह़द्दे शर्ई तक इस्तीआ़ब (या'नी मुकम्मल होने) में शुबा न रहे वाजिब है (स. 616) ❀ वुज़ू

में कुल्ली या नाक में पानी डालने का तर्क मक्रूह है और इस की आ़दत डाले तो गुनहगार होगा। येह मस्अला वोह लोग ख़ूब याद रखें जो कुल्लियां ऐसी नहीं करते कि ह़ल्क़ तक हर चीज़ को धोएं और वोह कि पानी जिन की नाक को (फ़क़त़) छू जाता है सूंघ कर ऊपर नहीं चढ़ाते येह सब लोग गुनहगार हैं और ग़ुस्ल में तो ऐसा न हो तो सिरे से न ग़ुस्ल होगा न नमाज़ (स. 616) ❀ वुज़ू में हर उ़ज़्व का पूरा तीन बार धोना सुन्नते मुअक्कदा है, तर्क की आ़दत से गुनहगार होगा (स. 616, माख़ूज़न) ❀ वुज़ू में जल्दी न चाहिये बल्कि दरंग (या'नी इत़्मीनान) व एह़तियात़ के साथ करे। अ़वाम में जो मश्हूर है कि "वुज़ू जवानों का सा, नमाज़ बूढ़ों की सी," येह वुज़ू के बारे में ग़लत़ है (स. 617) ❀ मुंह धोने में न गालों पर डाले न नाक पर न ज़ोर से पेशानी पर, येह सब अफ़्आ़ल जुह्हाल (या'नी जाहिलों) के हैं बल्कि बा आहिस्तगी बालाए पेशानी (या'नी पेशानी के ऊपर) से डाले कि ठोड़ी से नीचे तक बहता आए (स. 618) ❀ वुज़ू में मुंह से गिरता हुवा पानी मसलन कलाई पर लिया और (कलाई पर) बहा लिया (या'नी मुंह धोने में मुंह से गिरने वाले पानी से हाथ की कलाई नहीं धो सकते कि) इस से वुज़ू न होगा और ग़ुस्ल में (मुआ़मला जुदा है) मसलन सर का पानी पांव तक जहां जहां गुज़रेगा पाक करता जाएगा वहां नए पानी की ज़रूरत नहीं (स. 618) ❀ आदमी वुज़ू करने बैठा फिर किसी मानेअ़ (या'नी रुकावट) के सबब तमाम (या'नी मुकम्मल) न कर सका तो जितने अफ़्आ़ल किये उन पर सवाब पाएगा अगर्चे वुज़ू न हुवा (स. 618) ❀ जिस ने ख़ुद ही क़स्द (या'नी इरादा) किया कि आधा वुज़ू करेगा वोह इन अफ़्आ़ल पर सवाब न पाएगा, यूंही जो वुज़ू करने बैठा और बिला उ़ज़्र नाक़िस (या'नी अधूरा) छोड़ दिया

वोह भी जितने अफ़्आल बजा लाया उन पर मुस्तहिक़्क़े सवाब न होना चाहिये (स. 618) ❀ अगर सर पर मेंह (या'नी बारिश) की बूंदें इतनी गिरीं कि चहारुम (या'नी चौथाई) सर भीग गया मस्ह् हो गया अगर्चे उस शख़्स ने हाथ लगाया न क़स्द (या'नी न निय्यत व इरादा) किया (स. 619) ❀ ओस (या'नी शबनम) में सर बरहना (या'नी नंगे सर) बैठा और उस से चहारुम सर के क़दर भीग गया मस्ह् हो गया (स. 619) ❀ इतने गर्म या इतने सर्द पानी से वुज़ू मक्रूह है जो बदन पर अच्छी त़रह् न डाला जाए, तक्मीले सुन्नत न करने दे, और अगर कोई फ़र्ज़ पूरा करने से मानेअ् (या'नी रुकावट) हुवा तो वुज़ू ही न होगा (स. 620) ❀ पानी बेकार सर्फ़ (या'नी ख़र्च) करना या फेंक देना ह़राम है। (स. 621) (अपने या दूसरे के पीने के बा'द ग्लास या जग का बचा हुवा पानी ख़्वाह म ख़्वाह फेंक देने वाले तौबा करें और आयिन्दा इस से बचें) ❀ नाफ़ से ज़र्द पानी बह कर निकले वुज़ू जाता रहे (स. 622) ❀ ख़ून या पीप आंख में बहा मगर आंख से बाहर न गया तो वुज़ू न जाएगा उसे कपड़े से पोंछ कर पानी में डाल दें तो (पानी) नापाक न होगा (स. 624) ❀ ज़ख़्म पर पट्टी बंधी है उस में ख़ून वग़ैरा लग गया अगर इस क़ाबिल था कि बन्दिश न होती तो बह जाता तो वुज़ू गया वरना नहीं, न पट्टी नापाक (स. 624) ❀ क़त़रा उतर आया या ख़ून वग़ैरा ज़कर (या'नी उ़ज़्वे तनासुल) के अन्दर बहा जब तक उस के सूराख़ से बाहर न आए वुज़ू न जाएगा और पेशाब का सिर्फ़ सूराख़ के मुंह पर चमकना (वुज़ू तोड़ने के लिये) काफ़ी है (स. 624) ❀ ना बालिग़ न कभी बे वुज़ू हो न जुनुब (या'नी बे ग़ुस्ला) । उन्हें (या'नी ना बालिग़ान को) वुज़ू व ग़ुस्ल का हुक्म आ़दत डालने और आदाब सिखाने के लिये है वरना किसी ह़दस (या'नी वुज़ू तोड़ने

वाले अ़मल) से उन का वुज़ू नहीं जाता न जिमाअ़ से उन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो (स. 633) ❀ बा वुज़ू ने मां बाप के कपड़े या उन के खाने के लिये फल या मस्जिद का फ़र्श सवाब के लिये धोया पानी **मुस्ता'मल** न होगा अगरचें येह अफ़्आ़ल क़ुर्बत (या'नी रिज़ाए इलाही) के हैं (स. 636) ❀ ना बालिग़ का पाक हाथ या बदन का कोई जुज़ अगरचें बे वुज़ू हो पानी में डालने से क़ाबिले वुज़ू रहेगा (स. 637) ❀ बदन सुथरा रखना, मैल दूर करना, शर्अ़ में मत़्लूब है कि इस्लाम की बिना (या'नी बुन्याद) सुथराई (या'नी पाकीज़गी व सफ़ाई) पर है। इस निय्यत से बा वुज़ू ने बदन धोया तो क़ुर्बत (या'नी कारे सवाब) बेशक है मगर पानी मुस्ता'मल न हुवा (स. 637) ❀ **मुस्ता'मल** पानी पाक है इस से कपड़ा धो सकते हैं मगर इस से वुज़ू नहीं हो सकता और इस का पीना या इस से आटा गूंधना मक्रूहे (तन्ज़ीही) है (स. 637) ❀ पराया पानी बे इजाज़त ले गया अगरचें ज़बर दस्ती या चुरा कर उस से वुज़ू हो जाए मगर ह़राम है। अलबत्ता किसी के मम्लूक (या'नी मिल्कियत के)कूंएं से उस की मुमानअ़त पर भी पानी भर लिया उस का इस्ति'माल जाइज़ है (स. 650) ❀ जिस पानी में माए **मुस्ता'मल** की धार पहुंची या वाज़ेह़ क़त़रे गिरे उस से वुज़ू न करना बेहतर (स. 650) ❀ जाड़े में वुज़ू करने से सर्दी बहुत मा'लूम होगी इस की तक्लीफ़ होगी मगर किसी मरज़ का अन्देशा नहीं तो **तयम्मुम** की इजाज़त नहीं (स. 662) ❀ शैत़ान के थूक और फूंक से नमाज़ में क़त़रे और रीह़ का शुबा हो जाता है, हुक्म है कि जब तक ऐसा यक़ीन न हो जिस पर क़सम खा सके इस (वस्वसे) पर लिह़ाज़ न करे, शैत़ान कहे कि तेरा वुज़ू जाता रहा तो दिल में जवाब दे ले कि ख़बीस तू झूटा है और अपनी नमाज़

में मश्ग़ूल रहे (स. 697) ❀ मस्जिद को हर घिन की चीज़ से बचाना वाजिब है अगर्चे पाक हो जैसे लुआ़बे दहन (मुंह की राल, थूक, बल्ग़म) आबे बीनी (मसलन रींठ या नाक से नज़ले का बहने वाला पानी) आबे वुज़ू (स. 706) ❀ **तम्बीह :** बा'ज़ लोग कि वुज़ू के बा'द अपने मुंह और हाथों से पानी पोंछ कर मस्जिद में हाथ झाड़ते हैं (येह) महज़ **ह़राम** और ना जाइज़ है। (स. 706) ❀ पानी में पेशाब करना मुत्लक़न मक्रूह है अगर्चे दरिया में हो (स. 725) ❀ जहां कोई नजासत पड़ी हो तिलावत मक्रूह है (स. 727) ❀ पानी ज़ाएअ़ करना ह़राम है (स. 728) ❀ माल ज़ाएअ़ करना ह़राम है (स. 728) ❀ ज़मज़म शरीफ़ से ग़ुस्ल व वुज़ू बिला कराहत जाइज़ है (और पेशाब वग़ैरा कर के) ढेले (से ख़ुश्क कर लेने) के बा'द (आबे ज़मज़म से) इस्तिन्जा मक्रूह और नजासत धोना (मसलन पेशाब के बा'द टिश्यू पेपर वग़ैरा से सुखाए बिग़ैर) गुनाह (स. 742) ❀ (वोह) इसराफ़ कि (जो) ना जाइज़ व गुनाह है (वोह) सिर्फ़ (इन) दो सूरतों में होता है, एक येह कि किसी गुनाह में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) व इस्ति'माल करें, दूसरे बेकार महज़ माल ज़ाएअ़ करें (स. 743) ❀ ग़ुस्ले मय्यित सिखाने के लिये मुर्दे को नहलाया और उसे ग़ुस्ल देने की निय्यत न की वोह भी पाक हो गया और ज़िन्दों पर से भी फ़र्ज़ उतर गया कि फ़े'ल बिल क़स्द काफ़ी है, हां बे निय्यत सवाब न मिलेगा। (स. 707)

दीन की बातें रहूं सुनता सुनाता या ख़ुदा और रहूं इस पर अ़मल करता कराता या ख़ुदा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

वुज़ू के ज़रूरी अह़काम जानने के लिये नमाज़ के अह़काम में शामिल 63 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला वुज़ू का त़रीक़ा (ह़नफ़ी) का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला